लोकोक्तियाँ

1. **अधजल गगरी छलकत जाय (कम होने पर अधिक का दिखावा करना)**—नरेश कमाता तो है तीन हजार रुपए महीना और पाँच हजार रुपए का सूट बनवा लिया, जैसे बड़ा धनी हो। इसी को कहते हैं—अधजल गगरी छलकत जाय। **[2015, 17, 19, 20]**
2. **अपनी-अपनी डफली, अपना-अपना राग (अपने-अपने मतलब की बात करना)**—राकेश के परिवार का कोई भी सदस्य किसी की बात नहीं मानता। सभी 'अपनी अपनी डफली अपना-अपना राग' अलापते हैं। **[2016]**
3. **अपनी करनी पार उतरनी (जैसी करनी वैसा फल)**—यदि व्यक्ति अच्छा काम करता है तो उसे अच्छा फल मिलेगा और यदि बुरा काम करता है तो बुरा। पुराने लोगों ने उचित ही कहा है कि 'अपनी करनी पार उतरनी'। **[2015]**
4. **आम के आम गुठलियों के दाम (दुहरा लाभ प्राप्त करना)**—सोहन ने चावल तो पहले ही अच्छे दामों पर बेच दिये थे। अब धान की भूसियों को बेचकर भी पैसे बना रहा है। इसी को कहते हैं—'आम के आम गुठलियों के दाम'। **[2017, 19, 20]**
5. **आगे नाथ न पीछे पगहा (बन्धनहीन)**—रामू के कार्यों का अनुसरण मत करो, क्योंकि उसके तो 'आगे नाथ न पीछे पगहा'। लेकिन तुम्हारे साथ तो ऐसा नहीं है। **[2015, 16]**
6. **इधर कुआँ उधर खाई (सभी ओर परेशानी)**—शेर से बचने के लिए हेनरी पेड़ पर चढ़ गया। घबराहट में जिस डाल पर वह बैठा उस पर एक विषैला सर्प पहले से था। इसी परिस्थिति को कहते हैं—'इधर कुआँ उधर खाई'। **[2014]**
7. **उल्टे बाँस बरेली को (विपरीत कार्य वाला)**—मन्त्री जी ने बाँस से बने फर्नीचर मँगाने का आदेश मुम्बई की एक कम्पनी को दिलाकर 'उल्टे बाँस बरेली को' कहावत चरितार्थ की। **[2016]**

8. **ऊधौ का लेना न माधव को देना (किसी से कोई सम्बन्ध न रखना/ तटस्थ रहना)**—वह तो कार्यालय आता है, काम करता है और वापस घर चला जाता है। महीने के अन्त में अपनी तनख्वाह ले लेता है। उसके ऊपर यह कहावत सही उतरती है 'ऊधौ का लेना न माधव को देना'। [2018]

9. **एक ही थैली के चट्टे-बट्टे (एक-जैसे दुर्गुणों वाले)**—राम सिंह हो या ध्यान सिंह—ये जितने भी नेता हैं, सभी 'एक ही थैली के चट्टे-बट्टे' हैं।

10. **एक पन्थ दो काज (एक प्रयत्न से दोहरा लाभ)**—मोहन परीक्षा देने हरिद्वार गया था। उसने परीक्षा भी दे दी और गंगा स्नान भी कर आया। इसे कहते हैं—'एक पन्थ दो काज'। [2018, 20]

11. **एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा (बुरे व्यक्ति में अन्य बुरे व्यक्ति की संगति से अवगुणों में वृद्धि हो जाना)**—रमेश तो वैसे ही सबसे बेवजह उलझता रहता था और अब तो उसकी शादी भी झगड़ालू लड़की से हो गयी। अब तो वह वैसा ही हो गया है, जैसे—'एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा'। [2014]

12. **ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना (काम शुरू कर देने पर बाधाओं से भयभीत नहीं होना चाहिए)**—जब परीक्षा का फॉर्म भर दिया है तो पढ़ाई में मेहनत करनी ही पड़ेगी, क्योंकि 'जब ओखली में सिर दिया है तो मूसलों से क्या डरना'। [2016]

13. **कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली (आकाश-पाताल का अन्तर)**—तुम बार-बार सुरेश की बात करते हो। वह भला राधेश्याम की बराबरी क्या करेगा? 'कहां राजा भोज, कहाँ गंगू तेली'।

14. **का वर्षा जब कृषी सुखाने (अवसर बीतने पर साधन प्राप्त होना व्यर्थ ही होता है)**—गोस्वामी तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा है—"का वर्षा जब कृषी सुखाने। समय चूकि पुनि का पछिताने।।" [2016, 19]

15. **कंगाली में आटा गीला (कमी में और नुकसान होना)**—रहीम की नौकरी तो कहीं लग नहीं पा रही थी और पिता की बीमारी का खर्चा उसके ऊपर अलग से आ पड़ा। इसी को कहते हैं—'कंगाली में आटा गीला'।

16. **कभी घी घना, कभी मुट्ठी-भर चना *या* कभी गाड़ी नाव पर कभी नाव गाड़ी पर (परिस्थितियाँ सदैव एक-सी नहीं रहतीं)**—माधव कभी पूआ-पकवान खाते समय भी नाक-भौं सिकोड़ता था। आज उस भरपेट अन्न भी दुर्लभ हो गया है। समय-समय की बात है—'कभी घी घना, कभी मुट्ठी भर चना'।

17. **खरी मजूरी चोखा काम (बिना किसी समस्या के अच्छी आय)**—मुझे हलवाई की दुकान से पन्द्रह सौ रुपये प्रति माह नकद एवं दोनों समय का भोजन मिल जाता है, ऊपर से ग्राहकों की बख्शीश, न कोई झगड़ा न झंझट और समय-समय पर छुट्टियाँ भी मिल जाती हैं। इसी को कहते हैं—'खरी मजूरी चोखा काम'। [2014]

18. **खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे (लज्जित होकर क्रोध प्रकट करना)**—तुम नरेश का कुछ नहीं बिगाड़ पाये, तो मुझे शरीफ समझ लड़ने के लिए बार-बार छेड़ रहे हो क्योंकि 'खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचती' ही है। [2016]

19. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया (अत्यधिक परिश्रम का नगण्य फल मिलना)**—बोफोर्स तोपों के सौदे में दलाली के प्रकरण पर वर्षों से चल रही जाँच-पड़ताल का नतीजा 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया' जैसा ही है। [2014]

20. **गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास (सिद्धान्तहीन व्यक्ति, दलबदलू)**—आजकल के नेता राजनीति में जिस दल में अपना फायदा देखते हैं उसी दल की सदस्यता ग्रहण कर लेते हैं। जिस दल में जाते हैं, उस के होकर स्थायी रूप से नहीं रह पाते। उनके विषय में तो यही कहना उचित है कि 'गंगा गये गंगादास, जमुना गये जमुनादास'। [2015, 19]

21. **गुड़ खाये गुलगुलों से परहेज (दिखावटी परहेज)**—प्याज से बनी पकौड़ियाँ तो तुम बड़े चाव से खाते हो, लेकिन प्याज खाने से इतना परहेज करते हो। तुम जैसों के लिए ही कहा गया है कि 'गुड़ खाये गुलगुलों से परहेज'। [2018]

22. **गुरु कीजै जान, पानी पीजै छान (अच्छी तरह समझकर काम करना)**—आशाराम बापू का दुराचारी रूप सामने आने पर उसने बहुत-से भक्तों को पुरानी कहावत 'गुरु कीजै जान, पानी पीजै छान' याद आ गई। [2016]

23. **घर की मुर्गी दाल बराबर** *या* **घर का जोगी जोगड़ा, आन गाँव का सिद्ध (घर की चीज का महत्त्व नहीं होता है)**—बाजार से परदे के लिए कपड़ा खरीदना था, लेकिन जेब में पैसा नहीं था। ससुराल से आयी बेशकीमती चादर रखी थी उसी को परदे के स्थान पर लटका दिया। उचित ही कहा है—'घर की मुर्गी दाल बराबर'। [2016]

24. **घर का भेदी लंका ढावे (आपस की फूट विनाश कर देती है)**—जयचन्द ने मुहम्मद गोरी को बुलावा न भेजा होता तो देश दीर्घकालीन गुलामी से बच जाता। इसीलिए कहा गया है—'घर का भेदी लंका ढावे'। [2015, 16, 17]

25. **चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात (सुख के दिन हमेशा नहीं रहते)**—धन-दौलत पर गर्व नहीं करना चाहिए। यह तो तारों की तरह सवेरा होते ही विलीन हो जाती है। कहा भी गया है—चार दिन की चाँदनी, फिर अँधेरी रात'। [2014]

26. **चोर की दाढ़ी में तिनका (दोषी सदैव सशंकित रहता है)**—दीनदयाल की पुस्तक खोने पर अध्यापक ने सभी छात्रों से तलाशी देने के लिए कहा तो रामू ने सकपकाकर अपना बस्ता ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। इससे स्पष्ट हो गया कि 'चोर की दाढ़ी में तिनका'। [2015, 17, 19]

27. **छछूँदर के सिर पर चमेली का तेल (अपात्र को ऐसी वस्तु मिलना, जिसका वह पात्र न हो)**—नीलम जैसी रूप-यौवन-सम्पन्ना कन्या का विवाह मद्यप अनिल के साथ! लोगों ने कहा—यह तो ठीक वैसा ही हुआ, जैसे 'छछूँदर के सिर पर चमेली का तेल'। [2014]

28. **जैसे करनी वैसे भरनी/जैसा बोओगे वैसा काटोगे (बुरे काम का बुरा नतीजा)**—यदि आप अच्छे काम करेंगे तो आपको अच्छा फल मिलेगा और यदि बुरे काम करेंगे तो बुरा फल मिलेगा। सही ही कहा गया है कि 'जैसी करनी वैसी भरनी'। [2016, 18, 19]

29. **दूर के ढोल सुहावने (दूर की वस्तु अच्छी लगती है)**—तुम्हारी पत्नी क्या कम खूबसूरत है जो तुम धर्मेन्द्र की पत्नी की प्रशंसा कर रहे हो। तुम्हें शायद पता नहीं है कि 'दूर के ढोल सुहावने' लगते ही हैं। [2014]

30. **दूध का दूध, पानी का पानी (उचित न्याय, विवेकपूर्ण न्याय)**—आज भी भारत में विक्रमादित्य का न्याय प्रसिद्ध है, क्योंकि वे 'दूध का दूध, पानी का पानी' कर देते थे। [2019]

31. **धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का (कहीं का न रहना)**—मन्त्री-पद पाने के लिए उसने अपना दल छोड़ दिया। जब दूसरे दल में मन्त्री-पद न मिला तो शीर्ष नेताओं की निन्दा करने के कारण वह वहाँ से भी निकाल दिया गया। अब लोग कहते हैं—'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का'। [2016, 18]

32. **न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी (किसी काम को करने के लिए असम्भव-सी शर्त लगाना)**—प्रधानमन्त्री ने भाषण दिया कि जिस दिन भारत के सभी नेता ईमानदार हो जाएँगे, उसी दिन देश से गरीबी हट जाएगी। इस कथन को सुनकर एक श्रोता ने कहा कि 'न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी'। [2018]

33. **न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी (झगड़े को समूल नष्ट करना)**—"यदि तुम अपने अन्य दाँतो को खराब होने से बचाना चाहते हो तो जिन दो दाँतों में कीड़े लग गये हैं, उन्हें निकलवा दो", डॉक्टर ने मरीज को सलाह दी; क्योंकि कहा गया है—'न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी'। [2014, 18]

34. **नौ नकद न तेरह उधार (उधार की अपेक्षा थोड़ा नकद अच्छा)**—श्यामू ने अपने मित्र से कहा कि अभी लोगे तो अस्सी रुपये दूँगा और दीपावली के बाद लोगे तो सौ रुपये, इस पर उसके मित्र ने कहा—नहीं भाई, 'नौ नकद न तेरह उधार', अत: मुझे अभी ही दे दो। [2014, 15]

35. **बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद (किसी चीज के गुणों को न जानने वाला उसके महत्त्व को नहीं समझ सकता)**—पश्चिमी संगीत की धुनों पर थिरकने वाले युवाओं के सामने शास्त्रीय संगीत का कोई महत्त्व नहीं है। उनके लिए तो यह कहावत सत्य प्रतीत होती है कि—'बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद'। [2014, 18]

36. **मुख में राम बगल में छुरी (ऊपर से भला बन कर धोखा देना)**—यहाँ तुम रोज मुझसे मीठी-मीठी बातें करते थे और कल तुमने कचहरी में मेरे खिलाफ झूठी गवाही दी। तुम्हारे जैसे लोगों के लिए ही कहा गया है—'मुख में राम बगल में छुरी'। [2019]

37. **मतलबी यार किसके, दम लगाया खिसके (स्वार्थी व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध कर चलता बनता है)**—'मतलबी यार किसके, दम लगाया खिसके' यह कहावत आजकल के मित्रों पर पूरी तरह लागू होती है। [2016]

38. **मेरी तेरे आगे, तेरी मेरे आगे (चुगली खाना)**—अमित से सँभलकर रहना वह तो हर समय 'मेरी तेरे आगे, तेरी मेरे आगे' करता रहता है। [2016]

39. **सावन हरे न भादों सूखे (सदैव एक-जैसा)**—योगेश बड़ा ही हँसमुख है। उससे जब भी मिलो प्रसन्न ही मिलता है। उसके लिए तो 'सावन हरे न भादों सूखे' वाली उक्ति पूर्णतया चरितार्थ होती है। [2014, 18, 20]

40. **होनहार बिरवान के होत चीकने पात (होनहार बचपन से ही दिखाई देने लगता है)**—पण्डित जवाहरलाल नेहरू को देखकर एक आकृति-विज्ञानी ने भविष्यवाणी की थी कि यह बालक आगे चलकर देश का कर्णधार बनेगा, इसके लक्षण विलक्षण है क्योंकि 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'। [2014, 18, 19]

41. **हाथ कंगन को आरसी क्या (प्रत्यक्ष को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती)**—तुम तो सेंध बनाकर घर में घुसते हुए पकड़े गये हो। तुम्हारे चोर होने में कोई सन्देह नहीं रह गया; क्योंकि कहा गया है—'हाथ कंगन को आरसी क्या'। [2014, 18, 20]

42. **हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और (कपटपूर्ण व्यवहार)**—राधेलाल छोटा कर्मचारी है और बड़ा आदमी बनाना चाहता है। उसके व्यवहार में एकरूपता एवं मधुरता नहीं है। उसके जैसे लोगों के लिए ही कहा गया है 'हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और'। [2018]

शब्द	सन्धि-विच्छेद	
हर्षातिरेक	= हर्ष + अतिरेक	दीर्घ
नयनाभिराम	= नयन + अभिराम	दीर्घ
मुरारि	= मुर + अरि	दीर्घ
परमार्थः [2016]	= परम + अर्थ	दीर्घ
अद्यापि [2020]	= अद्य + अपि	दीर्घ
अश्वारोही	= अश्व + आरोही	दीर्घ
विद्यालय [2019]	= विद्या + आलयः	दीर्घ
परीक्षार्थी	= परीक्षा + अर्थी	दीर्घ
तथापि [2019]	= तथा + अपि	दीर्घ
ममतालयः	= ममता + आलयः	दीर्घ
वाचनालयः	= वाचन + आलयः	दीर्घ
कवीन्द्रः	= कवि + इन्द्रः	दीर्घ
वारीशः	= वारि + ईशः	दीर्घ
उपर्युक्त [2015]	= उपरि + उक्त	दीर्घ
सुधीन्द्र	= सुधी + इन्द्र	दीर्घ
सतीशः	= सती + ईशः	दीर्घ
सूक्ति	= सु + उक्ति	दीर्घ
भानूदय	= भानु + उदय	दीर्घ
वधूत्सव [2016]	= वधू + उत्सव	दीर्घ
पितृण	= पितृ + ऋण	दीर्घ
देवेन्द्र [2018]	= देव + इन्द्रः	गुण
देवेशः [2016]	= देव + ईशः	गुण
जितेन्द्रिय	= जित + इन्द्रिय	गुण
सुरेन्द्र [2016]	= सुर + इन्द्रः	गुण
सर्वेशः [2015]	= सर्व + ईशः	गुण
गणेश	= गण + ईश	गुण
यथेष्ट	= यथा + इष्ट	गुण
रमेशः	= रमा + ईशः	गुण
परमेश्वरः [2019]	= परम + ईश्वरः	गुण
तथेति [2015]	= तथा + इति	गुण
महोत्सव	= महा + उत्सव	गुण
सूर्योदयः	= सूर्य + उदयः	गुण
चन्द्रोदयः [2017]	= चन्द्र + उदयः	गुण
कमलोदय	= कमल + उदय	गुण
आत्मोत्सर्ग	= आत्म + उत्सर्ग	गुण
सदाचारोपदेशः	= सदाचार + उपदेशः	गुण
जलोर्मि	= जल + ऊर्मि	गुण
गंगोर्मिः	= गंगा + ऊर्मिः	गुण
महर्षिः [2014, 16]	= महा + ऋषिः	गुण

तवल्कार	= तव + लृकार	गुण
तदैव [2015]	= तदा + एव	वृद्धि
रीत्यनुसार	= रीति + अनुसार	यण्
यद्यपि [2014, 19]	= यदि + अपि	यण्
प्रत्यारोपण	= प्रति + आरोपण	यण्
प्रत्येक	= प्रति + एक	यण्
इत्येव	= इति + एव	यण्
मध्वरि:	= मधु + अरि:	यण्
अन्वय:	= अनु + अय:	यण्
अभ्युदय:	= अभि + उदय:	यण्
स्वागतम् [2019]	= सु + आगतम्	यण्
वध्वागमन	= वधू + आगमन	यण्
मात्राज्ञा [2016]	= मातृ + आज्ञा	यण्
लाकृति	= लृ + आकृति	यण्
जयति	= जे + अति	अयादि
नायक: [2014, 16]	= नै + अक:	अयादि
गायक: [2014,16, 18]	= गै + अक:	अयादि
पावक: [2015]	= पौ + अक:	अयादि
भावक:	= भौ + अक:	अयादि
कलाविव [2018]	= कलौ + इव	अयादि
विष्णवे	= विष्णो + ए	अयादि
नाविक:	= नौ + इक:	अयादि

(क) शब्द-युग्म

प्र.1. **पुरुष-परुष—** [2015, 17, 19, 20]
(क) नर और नारी (ख) आदमी और फरसा
(ग) पुरुष और पैसा (घ) आदमी और कठोर

प्र.2. **गृह-ग्रह—** [2018]
(क) घर और नक्षत्र (ख) घर और गृहस्थी
(ग) गिरोह और घर (घ) गाँव और घर

प्र.3. **पतन-पत्तन—**
(क) गिरना और उठना (ख) पत्ता और फूल
(ग) गिरना और बन्दरगाह (घ) पर्दा और किवाड़

प्र.4. **अभिराम-अविराम—** [2015, 17, 20]
(क) सुन्दर और लगातार (ख) राम और लक्ष्मण
(ग) अब और तब (घ) सुन्दर और मजबूत

प्र.5. **पास-पाश—**
(क) उत्तीर्ण और निकट (ख) निकट और जाल
(ग) निकट और ऊँचा (घ) समीप और दूर

प्र.6. **अंस-अंश—** [2017, 18, 19, 20]
(क) अंकुर और हिस्सा (ख) हिस्सा और अंकुर
(ग) कंधा और हिस्सा (घ) हिस्सा और कंधा

प्र.7. **उपकार-अपकार—**
(क) दूसरे का कार्य और बुरा (ख) पुकार और न बोलना
(ग) भलाई और बुराई (घ) अच्छा और दुष्ट

प्र.8. **वसन-व्यसन—** [2016, 19, 20]
(क) विवश और व्याकुल (ख) वस्त्र और आदत
(ग) कवच और भोजन (घ) विस्तार और अवधि

प्र.9. **अंश-अंशु—** [2015, 17]
(क) भाग और सूर्य (ख) सूर्य और भाग
(ग) भाग और किरण (घ) भाग और वरुण

प्र.10. **स्वर्ण-सवर्ण—** [2014, 15, 17, 20]

(क) सोना और अच्छा रंग (ख) सुनार और सोना
(ग) सोना और चाँदी (घ) सोना और उच्च जाति

प्र.11. **भित्ति-भीत—**

(क) भक्ति और भाग्य (ख) द्वार और दीवार
(ग) दीवार और डरा हुआ (घ) बाहर और भीतर

प्र.12. **अमूल्य-अमूल—**

(क) मूल-रहित और दूध (ख) मूलरहित और जड़ रहित
(ग) मूल्य सहित और मूलभूत (घ) अधिक मूल्यवाला और मूर्ख

प्र.13. **छात्र-क्षात्र—** [2014]

(क) छतरीधारी और विद्यार्थी (ख) विद्यार्थी और नेता
(ग) क्षत्रियधर्मी और विद्यार्थी (घ) विद्यार्थी और क्षत्रियोचित

प्र.14. **नियत-नियति—**

(क) निश्चित और भाग्य (ख) आदत और भाग्य
(ग) प्रकृति और गणना (घ) आदत और गणना

प्र.15. **तरणि-तरणी—** [2016, 17]

(क) सूर्य और नाव (ख) सूरज और चन्दा
(ग) नाव और स्त्री (घ) तरना और स्त्री

प्र.16. **अब्ज-अब्द—** [2018]

(क) कमल और वर्ष (ख) वर्ष और कमल
(ग) वृद्ध और जीर्ण (घ) चन्द्र और सूर्य

प्र.17. **कपिश-कपीश—** [2016]

(क) मटमैला और अंगद (ख) सुग्रीव और काला
(ग) बालि और सुग्रीव (घ) मटमैला और सुग्रीव

प्र.18. **अग-अध—** [2016]

(क) आगे और पीछे (ख) अचल और पाप
(ग) नया और पुराना (घ) सम्पूर्ण और पुण्य

प्र.19. **पाथोज-पाथाद—**

(क) बादल और कमल (ख) कमल और बादल
(ग) चन्द्रमा और सूर्य (घ) समुद्र और आकाश

प्र.20. **आभरण-आमरण—** [2015]

(क) पोशाक और मृत्यु (ख) आभूषण और मृत्युपर्यन्त
(ग) मृत्यु और जीवन (घ) जीवन और मृत्यु

प्र.21. **सुगन्ध-सौगन्ध—**

(क) सुवास और दुर्गन्ध (ख) तोता और तोते का बच्चा
(ग) महक और शपथ (घ) अन्धा तोता और सैकड़ों खुशबू

प्र.22. **क्षति-क्षिति—** [2014]

(क) हानि और लाभ (ख) हानि और आकाश
(ग) आकाश और पृथ्वी (घ) हानि और पृथ्वी

प्र.23. **अलि-आली—** [2015]

(क) भौंरा और सखी (ख) भौंरा और काली
(ग) काली और भौंरा (घ) सखी और भौंरा

प्र.24. **जगत्-जगत—** [2015]

(क) संसार और कुएँ का चबूतरा (ख) संसार और संसारी
(ग) कुआँ और संसार (घ) घड़ा और पानी

प्र.25. **उपल-उत्पल—** [2015]

(क) उत्पन्न और ऊपर (ख) ऊपर और नीचे
(ग) ओला और कमल (घ) समाप्त और प्रारम्भ

प्र.26. **बात-वात—** [2018, 20]

(क) भात और दाल
(ख) बातचीत और वायु (वार्ता और हवा)
(ग) हवा और पानी
(घ) बाट और तराजू

प्र.27. **वहन-बहन—** [2018]

(क) ढोना-भगिनी (ख) वहना-वहिनी
(ग) ढोना-बहना (घ) ढोना-ढहाना

प्र.28. **अनुभव-अनुभूति—** [2018]

(क) व्यवहार रहित ज्ञान और अव्यावहारिक ज्ञान
(ख) व्यवहार से प्राप्त आन्तरिक ज्ञान और चिन्तन से प्राप्त आन्तरिक ज्ञान
(ग) अल्पकालिक ज्ञान और दीर्घकालिक प्राप्त ज्ञान
(घ) व्यावहारिक ज्ञान और अव्यावहारिक ज्ञान

प्र.29. **ईर्ष्या-स्पर्धा—** [2018]

(क) दूसरों की उन्नति से प्रसन्न होना और दूसरों से प्रेरणा लेना
(ख) दूसरों से द्वेष करना और दूसरों से प्रेम करना
(ग) दूसरों की उन्नति से जलना और दूसरों की उन्नति और गुणों को प्राप्त करने की होड़
(घ) अवनति और उन्नति

प्र.30. हर-हरि— [2018]

(क) शिव और पार्वती (ख) हरण और हरा रंग

(ग) शंकर और विष्णु (घ) विष्णु और शिव

प्र.31. अनल-अनिल— [2015, 17, 19]

(क) पृथ्वी और आकाश (ख) अग्नि और वायु

(ग) जल और वायु (घ) पानी और आग

प्र.32. अम्बुज-अम्बुद— [2014, 16, 19]

(क) कमल और बादल (ख) जल और कमल

(ग) बादल और समुद्र (घ) समुद्र और कमल

उत्तर (क) कमल और बादल

प्र.33. कटिबन्ध-कटिबद्ध [2019]

(क) फेटा और तैयार (ख) करधनी और तैयार

(ग) तैयार और बाजूबन्द (घ) उद्यत और उद्धत।

प्र.34. जलद-जलधि [2020]

(क) बादल और पानी (ख) समुद्र और जल

(ग) बादल और वर्षा (घ) बादल और समुद्र।

प्र.35. श्रवण-श्रमण [2020]

(क) सावन-भ्रमण (ख) सुनना-संन्यासी

(ग) वेद-पुजारी (घ) नाक-संन्यासी

प्र.36. अभय-उभय [2020]

(क) भयपूर्ण और भयरहित (ख) भयहीन और दोनों

(ग) आकाश और पृथ्वी (घ) आशा और लापरवाही।

शब्द-युग्म	अर्थ
1. गृह [2017, 18]	घर
ग्रह	नक्षत्र
2. अशक्त [2018]	शक्तिहीन
आसक्त	मोहित
3. अपकार	बुरा करना
उपकार	भला करना
4. वात	वायु
बात	बातचीत
5. अनुसरण	पीछे चलना
अनुकरण	नकल करना
6. उत्कर्ष	उत्थान
अपकर्ष	पतन
7. तरणि	सूर्य
तरुणी	युवती, स्त्री
तरणी [2014, 16, 17]	नाव
8. चिर	दीर्घ बहुत
चीर	एक वस्त्र

9.	जलद	बादल
	जलज	कमल
	जलधि	समुद्र
10.	देव [2018]	देवता
	दैव	भाग्य
11.	नीर [2014]	जल, पानी
	नीड़	घोंसला
12.	आरत	दु:खी
	आराति	शत्रु
13.	प्रसाद [2016, 18]	कृपा
	प्रासाद	महल, भोग
14.	कुल [2014, 18, 20]	वंश
	कूल	किनारा
15.	कृपण	कंजूस
	कृपाण	कटार
16.	लक्ष्य [2014]	निशाना, उद्देश्य
	लक्ष	लाख
17.	अवधि [2014]	काल-सीमा
	अवधी	भाषा का नाम
18.	उद्धत [2014]	चंचल, उद्दण्ड
	उद्यत	तैयार
19.	नीरद	बादल
	नीरज	कमल
20.	द्रव्य [2019, 20]	धन
	द्रव	तरल पदार्थ
21.	अवलम्ब	सहारा
	अविलम्ब	शीघ्र
22.	अपेक्षा [2018, 19]	आशा, इच्छा, तुलना में
	उपेक्षा	निरादर, अनदेखी, अवहेलना
23.	नियत	निश्चित
	नियति	भाग्य
24.	प्रणय [2017]	प्रेम, प्रीतियुक्त, विश्वास
	परिणय	विवाह
25.	भवन [2014, 19]	घर, श्रेष्ठ मकान
	भुवन	संसार
26.	सर [2017, 19]	तालाब
	शर	बाण
27.	तुरंग [2017]	घोड़ा
	तरंग	लहर
28.	निर्माण	बनाना, रचना
	निर्वाण	मोक्ष
29.	सुत	पुत्र
	सूत	सारथी
30.	शशधर	चन्द्रमा
	शशिधर	शिव
31.	गणना	गिनती
	गड़ना	चुभना
32.	द्विप	हाथी
	द्वीप	टापू
	दीप	दीपक
33.	कंगाल [2018]	दरिद्र
	कंकाल	अस्थि-पंजर

34.	अथक	जिसमें थकान न लगे
	अकथ	जो कहने योग्य नहीं है
35.	प्रमाण	साक्ष्य
	प्रयाण	प्रस्थान
36.	उपहार	भेंट
	उपचार	इलाज
37.	अचल	स्थिर
	अंचल	सीमा
38.	प्रलाप	निरर्थक बात, बकवास
	विलाप	रोना, शोक करना
39.	प्रथा [2016]	रीति-रिवाज
	पृथा	कुन्ती
40.	आतप	धूप
	आपात	संकट
	आपाद [2014]	पैर तक
41.	अनल	आग [2015, 19]
	अनिल	वायु
42.	आकर	खजाना [2019]
	आकार	रूप

वाक्यांश के लिए एक शब्द

नाटक का भाग	अंक
न करने योग्य [2015]	अकरणीय
अनुकरण करने योग्य [2020]	अनुकरणीय
जहाँ जाया न जा सके	अगम
अण्डे से उत्पन्न होने वाला	अण्डज
जिसका कहीं भी अन्त न हो [2018]	अनन्त
जो इन्द्रियों द्वारा न समझा जा सके या जिसे नेत्रों द्वारा देखा व समझा न जा सके [2014]	अगोचर
जो कहा न जा सके [2020]	अकथनीय
जिसकी तुलना न हो सके [2017]	अतुल्यनीय
स्त्री जो अभिनय करती हो [2015]	अभिनेत्री
जिसके शत्रु का जन्म ही न हुआ हो [2016]	अजातशत्रु
जिसे कोई जीत ही न सके [2020]	अजेय
जिसे जाना न जा सके [2017]	अज्ञेय
जो अपने स्थान से डिगे नहीं	अडिग
जो व्यक्ति जन्म न ले [2020]	अजन्मा
जिस पद्य के अन्त में तुक न मिले	अतुकान्त
जिसके समान दूसरा न हो [2017, 18]	अद्वितीय
जो देखने योग्य न हो	अदर्शनीय
जो आँखों से दिखाई न दे	अदृश्य
शुभकार्य को विधि-विधान से करना	अनुष्ठान
जिसको माता-पिता का आश्रय न मिला हो *या* जिसका कोई दूसरा न हो [2018]	अनाथ
जो दूर की बात न सोच सके	अदूरदर्शी

जो एक-दूसरे पर आश्रित हो	अन्योन्याश्रित
जिसका मन किसी दूसरी ओर लगा हो [2017]	
जो वचन से परे हो/जिसका वचन का वाणी द्वारा वर्णन न किया जा सके [2016]	अनिर्वचनीय
जो उत्तीर्ण न हुआ हो	अनुत्तीर्ण
विशेष कार्य हेतु दिया जाने वाला शासकीय आर्थिक अनुदान	सहायता
आधा दिन (दोपहर) बीतने के बाद का समय [2016]	अपराह्न
जिसक अनुवाद किया गया हो	अनूदित
जिसकी आशा न की गयी हो [2017]	अप्रत्याशित
जो सदा से चला आ रहा हो	अनित्य
जिस पर विश्वास न किया जा सके [2010]	अविश्वसनीय
बहुत कम बोलने वाला [2015, 18]	अल्पभाषी
जिसका वर्णन न हो सके [2017, 18]	अवर्णनीय
जो बाँटा न जा सके [2015]	अविभाज्य
भला-बुरा समझने की शक्ति न होना	अविवेक
जिसका विवाह न हुआ हो/जो परिणय सूत्र में न बँधा हो	अविवाहित
बिना वेतन लिये काम करने वाला	अवैतनिक
ऐसा, रोग जिसका इलाज सम्भव न हो	असाध्य
फेंककर चलाया जाने वाला हथियार [2015]	अस्त्र
किसी प्राणी को हानि न पहुँचाना	अहिंसा
ईश्वर या उसकी शक्ति का जन्म ग्रहण करना	अवतार
जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो [2014, 15]	अतिथि
जो पहले कभी न हुआ हो	अभूतपूर्व
जिसकी उपमा न दी जा सके [2015, 17, 19]	अनुपम/अनुपमेय
जो कम खाता हो	अल्पाहारी
जिसकी सीमा न हो [2016]	असीम
जिसमें कुछ भी करने की क्षमता न हो [2019]	अक्षम
जो मापा न जा सके	अमापनीय
जिसमें आसक्ति न हो	अनासक्त
जिसके बिना काम न चल सके [2016]	अपव्ययी
व्यर्थ ही व्यय करने वाला व्यक्ति	अनश्वर
जिसका नाश न हो	अनुगामी
पीछे-पीछे चलने वाला	अनुच्चरित
जिसका उच्चारण न किया गया हो [2014]	अनशन
जिसे सहन न किया जा सके	असहनीय
किसी वस्तु को प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा या इच्छा [2018]	अभीप्सा
जिसे आँखों से न देखा गया हो [2016]	अदृष्ट
जो शोक करने योग्य नहीं है [2016]	अशोच्य
जो कहा न जा सके [2015]	अकथनीय
बिना पलक झपकाए हुए [2015]	अपलक
जिसको क्षमा न किया जा सके। [2017, 19]	अक्षम्य
अचानक हो जाने वाला	आकस्मिक
जिसकी बाँहें घुटनों तक हो [2016]	आजानुबाहु
पैर से सिर तक [2017, 19]	आपादमस्तक
लेखक द्वारा लिखित अपनी जीवनी *या* अपने जीवन का स्वलिखित इतिहास	आत्मकथा
अपने आपको धोखा देने वाला [2014, 16]	आत्मवंचक
किसी वस्तु/व्यक्ति का गुण-दोष विवेचन	आलोचना
ईश्वर (वेदों) में विश्वास रखने वाला व्यक्ति [2016]	आस्तिक

या जो ईश्वर में विश्वास करता है [2020]
आशा से अधिक [2015] — **आशातीत**
किसी बात पर बार-बार जोर देना [2015, 18] — **आग्रह**
आदि (प्रारम्भ) से अन्त तक [2014] — **आद्योपान्त/आद्यन्त**
रोगहीन होने की स्थिति — **आरोग्य**
बालक से बूढ़े तक सभी — **आबालवृद्ध**
जिस वस्तु की इच्छा हो [2014] — **इच्छित**
जिसने अपना ऋण उतार लिया हो — **उऋण**
जिसका स्वभाव उदार हो — **उदारचेता**
जल और भू पर समान रूप से चलने वाला [2014] — **उभयचर**
खाने बाद बचा जूठा भोजन — **उच्छिष्ट**
ऊपर कहा हुआ — **उपर्युक्त**
जिस भूमि में कुछ उत्पन्न न होता हो — **ऊसर**
जो इच्छा के अधीन हो [2014, 18] — **ऐच्छिक**
जिसका चित्त एक जगह स्थिर हो — **एकाग्रचित**
इतिहास से सम्बन्ध रखने वाले तथ्य [2018] — **ऐतिहासिक**
जो फूल न खिला हो [2016] — **कली**
जो स्त्री कविता लिखती हो [2016] — **कवयित्री**
सारे शरीर की हड्डियों का ढाँचा। [2017] — **कंकाल**
उच्च कुल में उत्पन्न या सम्बन्धी — **कुलीन**
बहुत तेज बुद्धि वाला [2014, 17] — **कुशाग्रबुद्धि**
कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य के निर्णय में असमर्थ — **किंकर्त्तव्यविमूढ़**
उपकार को मानने वाला [2014, 19] — **कृतज्ञ**
उपकार को न मानने वाला [2018, 19]
या जो अपने प्रति की गई भलाई को न माने [2018] — **कृतघ्न**
जिसे क्षमा किया जा सके [2016] — **क्षम्य**
तोड़कर टुकड़े-टुकड़े किया हुआ — **खण्डित**
आकाश को छूने वाला — **गगनचुम्बी/गगनस्पर्शी**
जिस पर चिह्न लगाया गया हो [2014] — **चिह्नित**
किसी को सावधान करने के लिए कही जाने वाली बात [2016] — **चेतावनी**
सर्वसाधारण से सम्बन्धित [2017] — **सार्वजनिक**
छोटे-से छोटे दोष की खोज करने वाला [2016] — **छिद्रान्वेषी**
दूसरों के दोषों को ढूँढ़ने वाला [2017] — **छिद्रान्वेषी**
किसी वस्तु को देखने अथवा सुनने की प्रबल इच्छा [2018] — **जिज्ञासा**
जानने की इच्छा रखने वाला [2014, 16, 19, 20] — **जिज्ञासु**
जिसने इन्द्रियों को जीत लिया हो — **जितेन्द्रिय**
जीवित रहने की उत्कट इच्छा [2014, 17] — **जिजीविषा**
जो सब-कुछ जानता हो [2016] — **ज्ञानमय**
जो किसी का पक्ष न ले [2016, 18] — **तटस्थ/निष्पक्ष**
अनुचित बात के लिए आग्रह [2014, 18] — **दुराग्रह**
जिस पर आक्रमण न हो सके [2014] — **दुराक्रम्य**
गोद लिया हुआ पुत्र [2014, 18] — **दत्तक**
जहाँ पहुँचना कठिन हो [2015] — **दुर्गम**
जिसे प्राप्त करना कठिन हो [2016] — **दुर्लभ**
जिसका दमन करना कठिन हो [2017] — **दुर्दमनीय**
दूसरे के बच्चे का पालन-पोषणे करने वाली [2016] — **धाय**
जो ईश्वर में विश्वास नहीं करता [2018] — **नास्तिक**
जिसने कोई अपराध न किया हो [2018] — **निरपराध**
जहाँ कोई मनुष्य न रहता हो — **निर्जन**

जिसका कोई आकार न हो	निराकार
नीति को जानने व समझने वाला [2018]	नीतिज्ञ
दूसरों पर आश्रित रहने वाला [2015, 18]	पराश्रित
पैरों से जल पीने वाला [2015]	पादप
पृथ्वी से सम्बन्धित [2014]	पार्थिव
जिसके आर-पार देखा जा सके [2018]	पारदर्शी
जो अपने आचरण/अन्तःकरण से पवित्र हो	पूतात्मा
रास्ता दिखाने वाला [2017]	पथ-प्रदर्शन
जो आँखों के सामने हो। [2019]	प्रत्यक्ष
कम खाने वाला व्यक्ति	मितभोजी
संयम से और कम खर्च करने वाला [2018]	मितव्ययी
संयम से और कम बोलने वाला। [2019]	मितभाषी
जिसकी इच्छाएँ बहुत ऊँची हों। [2019]	महत्त्वाकांक्षी
जिसका मूल्य बहुत अधिक हो	मूल्यवान
किसी बात का गूढ़ रहस्य जानने वाला [2015]	मर्मज्ञ
जो मृत्यु के समीप हो [2014]	मरणासन्न
दोपहर का समय [2018]	मध्याह्न
रात्रि में विचरण करने वाला [2016]	रात्रिचर
जनसाधारण के गीत [2015]	लोकगीत
जो वन्दना करने योग्य हो [2015, 18]	वन्दनीय
जिस महिला की कोई सन्तान न हो	वन्ध्या
जो व्यर्थ ही अधिक बोलता हो [2014]	वाचाल
विश्वास करने योग्य	विश्वसनीय
पुरुष जिसका विवाह हुआ हो	विवाहित
वह स्त्री जिसका पति मर गया हो	विधवा
वह पुरुष जिसकी पत्नी मर गयी हो [2018]	विधुर
विदेश में रहने वाला [2017, 18]	विदेशी
जिसके भीतर की हवा का तापमान समस्थिति में रखा गया हो [2016]	वातानुकूलित
जो विधान द्वारा मान्य हो [2018]	वैधानिक
जो शास्त्र जानता है [2015]	शास्त्रज्ञ
सदैव रहने वाला [2015]	शाश्वत
शरण में आया हुआ व्यक्ति [2014]	शरणागत
सौ वर्ष की आयु पूरी करने वाला [2016]	शतायु
शिष्टाचारवश किया गया कार्य [2015]	शिष्टाचार
जिसका शोषण किया गया हो	शोषित
ईश्वर को साकार मानने वाला भक्त	सगुणोपासक
जिसका पति जीवित हो	सधवा
जो आसानी से मिल सके	सुलभ
जो संगीत जानता हो [2018]	संगीतज्ञ
किसी बात का पंजिका में चढ़ाना	सूचीबद्ध
जो पढ़ना-लिखना जानता हो [2014]	साक्षर
गाय जिसके साथ बछड़ा हो	सवत्सा
सदा सत्य बोलने वाला [2017]	सत्यवादी
जो पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन करता हो	सम्पादक
जो सबका प्यारा हो	सर्वप्रिय
जिसमें सबकी सम्मति हो	सर्वसम्मत
अभी-अभी स्नान किया हुआ/की हुई। [2019]	सद्यःस्नात/सद्यःस्नाता
जो सब कुछ जानता हो। [2019, 20]	सर्वज्ञ
जिसमें सहने की शक्ति हो [2014]	सहनशील
समान आयु वाला [2014]	समवयस्क